हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता का क्रांतिकारी स्वरूप

(18वीं सदी उत्तरार्द्ध से 19वीं सदी पूर्वार्द्ध के विशेष सन्दर्भ में)

-डॉ. कृष्णबीर सिंह

आज पत्रकारिता का स्वरूप मुख्य रूप से दो भागों में दिखाई देता है- प्रिंट मीडिया एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया। प्रिंट मीडिया का सरोकार सामान्य लोगों तक एवं सामान्यजन की पहुँच या सामर्थ्य प्रिंट मीडिया तक बन जाती है जबकि इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आज भी पूंजीपतियों के अधिकार क्षेत्र में दिखाई देता है। वास्तव में इसकी एक लम्बी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। विशेषत: प्रिंट मीडिया जो पत्रकारिता का पितामह है, का हजारों वर्षों का इतिहास है जो हमें प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में दिखाई देता है। मूल विषय पर विस्तृत रूप से विचार करने से पूर्व पत्रकारिता की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं पत्र, पत्रकारिता व पत्रकार की प्रकृति एवं संरचना के मूल रूप को जानना प्रासंगिक प्रतीत होता है।

जैसा कि पूर्व में उल्लिखित किया जा चुका है पत्रकारिता अपने भ्रूण जन्म, शैशव, बालपन, युवा आदि का लम्बा सफर तय करने के पश्चात् आज के स्वरूप तक पहुँची है। प्राचीन पत्रकारिता के लिखित एवं मौखिक दो रूप दिखाई देते हैं। विशेषत: पाषाणकाल में शिलालेखों के माध्यम से सूचना प्रेषित की जाती थीं। ईसा की कई शताब्दियों पूर्व से लेकर मध्य युग तक लिखे गये अभिलेखों के इतिहास का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि भिन्न भिन्न देशकाल वातावरण में राजाओं एवं सामन्तों का मुख्य उद्देश्य अभिलेखों के माध्यम से अपनी दिग्विजयों, जीवनी की सामाजिक, धार्मिक एवं राजनीतिक घटनाओं को चिरस्थायी बनाना था[1]। ईसा पूर्व 4000 की सुमेरी सभ्यता की चित्रलिपि एवं ईसा पूर्व 600-500 के युनानी अभिलेखों को इस श्रेणी में सम्मिलित किया जा सकता है[2]। वास्तव में प्राचीन अभिलेखों की अति महत्त्वपूर्ण किंतु विस्तृत परम्परा दिखाई देती है। ईसा पूर्व 1400 का एक अभिलेख एशिया माइनर के बोगज कोई नामक स्थान पर मिलता है जिसमें भारतीय आर्यों की विभिन्न सूचनाएँ दी गई हैं एवं साथ ही इस अभिलेख में इन्द्र, वरुण, मित्र और नासत्य के अलावा ऋग्वैदिक अन्य देवताओं का भी उल्लेख उपलब्ध है।

इसी क्रम में अशोक सम्राट के शिलालेख सिंधु घाटी, कुषाणों, इण्डोग्रीक व अन्य राजाओं के अभिलेख, मौर्यकालीन अभिलेख तथा शृंगकालीन अभिलेख भी दिखाई देते हैं। बाद के क्रम में कदम्ब एवं गंगवंशीय अभिलेखों[3] के अलावा अनेकों मुस्लिम बादशाहों द्वारा खुदवाये गये अभिलेख भी प्राप्त होते हैं।[4]

मौखिक सम्प्रेषण जनसूचना का सशक्त माध्यम प्रारम्भ से था और आज भी है। इस विद्या में देवर्षि नारद एवं घंटेवाले, डौंडीगर, डुगडुगी बजाने वाले दिखाई देते हैं। वहीं दृश्यमीडिया के पितामह संजय का नाम सर्वोपरी लिया जा सकता है जिसने महाभारत युद्ध का आंखों देखा विवरण धृतराष्ट्र को बताया।[5] देवर्षि नारद निस्सन्देह एक मेधावी पत्रकार के रूप में जाने जा सकते हैं। विश्वकोश में नारद को पत्रकार रूप में मान्यता दी गई है। देवर्षि नारद इतने कुशाग्र व सफल पत्रकार कहे जा सकते हैं कि वे सुर असुर दोनों पक्षों में समान रूप से मान्य था और दोनों पक्ष उनका सम्मान करते थे। यही कारण था कि देवर्षि नारद जो भी सूचना दे देते दोनों पक्ष उसे सत्य और गम्भीरता पूर्वक लेते थे। कोई भी पक्ष उनके अपमान की बात सोच भी न सकता था।[6]

निष्कर्षत: भारत में पत्रकारिता के आरम्भिक स्वरूप को हम पौराणिककाल में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। इस दृष्टि से महर्षि नारद को आदि पत्रकार माना जा सकता है जो एक बात को दूसरी जगह पहुँचाने की कला में माहिर थे।[7]

पौराणिक ग्रन्थों, शिलालेखों के माध्यम से ज्ञात होता है कि पत्रकार के अनेकों पर्यायवाची प्राप्त होते हैं जैसे कौटिल्य के चर, गूढ पुरुष और स्त्री[8] सम्राट अशोक के प्रतिवेदक, महाभारत में उल्लेखित वातिक जो युद्धकाल में वृत निवेदन और वृतप्रसारण का कार्य किया करते थे।[9] यद्यपि कुछेक विद्वान इन पौराणिक पात्रों को पत्रकार एवं उनके कार्य को पत्रकारिता की श्रेणी में सम्मिलित नहीं करते लेकिन पत्रकारिता की फलक अत्यन्त विशाल होने के कारण ऐसे विद्वानों का असहमत होना न्यायोचित नहीं है। इसी क्रम में जब हम पश्चिम की ऐतिहासिक पत्रकारिता पर प्रकाश डालते हैं तो हमें सामान्यत: जॉन मिल्टर और होमर जैसे प्रसिद्ध रचनाकार दिखाई देते हैं। जो अपनी रचनाओ को नगाड़े आदि बजा बजाकर सार्वजनिक रूप से लोगों को एकत्र करके विभिन्न पत्रों के माध्यम से अपनी कृति के कथानक या विषय से अवगत करवाते थे। यह परम्परा हमें भारतीय राजाओं में भी दिखाई देती है जो अपनी राजाओं को प्रचारित प्रसारित करने के लिए ढ़ोल नगाड़ों एवं अन्य वाद्ययन्त्रों का सहारा लिया करते थे।

समाचार पत्र के सन्दर्भ में जब हम पत्रकारिता का विकास प्रक्रिया को देखते हैं तो हमे सूचना प्राप्त होती है कि ई. पूर्व 60 में रोमन साम्राज्य परिषद् का नेतृत्व जूलियट सीजर की प्रमुखता में आया। उसने हाथ से लिखा हुआ एकटा डाटाना एक दैनिक बुलेटिन प्रारम्भ करवाया जिसमें सामान्यत: सरकारी घोषणाएँ प्रकाशित की जाती थीं।[10] इसी भाँति ई. पूर्व पाँचवी शताब्दी में रोम साम्राज्य में संवाद लेखकों के विषय में भी उललेख प्राप्त होता है जो समाचारों, घटनाओं को अपने हाथ से लिखकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाया करते थे। 60 ई. पूर्व जूलियस सीजर ने तो एकटा डायना नामक दैनिक बुलेटिन का शुभारम्भ ही कर दिया था।[11]

अध्यक्ष-हिन्दी विभाग, एस.एस. जी. पारीक पी.जी. कॉलेज, जयपुर ,9413970222

यदि हम भारत के मुगल शासन पर दृष्टिपात करते हैं तो हमें इस अवधि में भी पत्रकारिता संबंधी अनेकों महत्त्वपूर्ण सामग्री प्राप्त होती है। मुगल शासकों ने अपने यहाँ वाक्यानवीशों को विधिवत नियुक्त कर रखा था जो घटित घटनाओं एवं अन्य महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को समाचार पुस्तिका में अंकित करके विभिन्न शासकीय स्थानों पर उपलब्ध करवाते थे। इन वाक्यानवीशों के विषय में विस्तृत जानकारी प्रसिद्ध यात्री बर्नियर ने अपनी पुस्तक ट्रेवल इन द मुगल एम्पायर में दी है। इसके अतिरिक्त मुगलकाल में अनेकों दैनिक बुलेटिन भी निकला करते थे। इसकी प्रामाणिक सूचना हमें नीकोला मैनुक्की जो एक इतालवी नागरिक यात्री था, की संस्मरणात्मक पुस्तक से प्राप्त होती है।[12] मुगलों की अंतिम डायरी उर्दू अखबार के रूप में बादशाह बहादुरशाह जफर द्वारा सिराजइल अखबार निकाले जाने की सूचना भी प्राप्त होती है। जहाँ तक विदेशों की बात है तो सन् 1561 में ब्रिटेन में न्यूज आउट ऑफ केन्ट नामक एक पृष्ठीय अखबार का प्रकाशन मुद्रण मशीन द्वारा प्रारम्भ हुआ। इसके पश्चात् सन् 1575 में न्यूज न्यूज, सन् 1609 में अविशरिलेशन ओडेटे जी टूंग नामक समाचार पत्र जर्मनी के आसबर्ग नगर से प्रकाशित हुए। सन् 1620 में विश्व का नियमित समाचार पत्र माने जाने वाला पत्र एडस्टर्डम नामक स्थान से विकली न्यूज नाम से प्रकाशित होने लगा। इसके पश्चात सन् 1621-22 में अनेकों समाचार पत्रों का विभिन्न स्थानों से मुद्रण एवं प्रकाशन होने लगा। लेकिन पुरातत्व की खोज की ओर लोटें तो पुरातत्व मुद्रण को ईसा की दूसरी सदी से आरम्भ हुआ बताती हैं। चीन में 175 ई. में ठप्पे द्वारा ग्रंथ का मुद्रण किया गया। 922 ई. में एक लाख तीस हजार पृष्ठों का त्रिपिटक ग्रंथ छपा। वर्तमान मुद्रण प्रणाली का इतिहास 500 वर्षो से अधिक पुराना नहीं है। धातु के टाइप सर्वप्रथम 1450 ई. मैं जर्मनी में बने रोम के एक्टा डायर्ना तथा चीन के पीकिंग गजट से पत्रकारिता का आरम्भ माना जाता है। आजकल के अखबारों का आरम्भिक रूप नीदरलैण्ड के न्यूजाइटंग 1526 ई. में मिलता है। जर्मनी से 1615 ई. में फैंकफूर्ट जर्नल, फ्रांस से 1631 ई. में गजट द फ्रांस, बेल्जियम से 1666 ई. में 6 गजट वैनगर, इग्लैंड से 1667 ई. में लंदन गजट तथा संयुक्त राष्ट्र अमेरिका से 1690 ई. में पब्लिक अमरेजेस का प्रकाशन हुआ। 11 मार्च 1702 ई. में डेली कोंट दैनिक निकला।[13]

यदि हम भारत में प्रेस के प्रयोग का इतिहास खोजते हैं तो सन् 1556 में गोवा में पुर्तगालियों द्वारा प्रेस का प्रयोग किया जाने लगा था। सन् 1762 में श्री बोल्टस ने एक सार्वजनिक नोटिस मुद्रित एवं प्रकाशितकर कलकत्ता के कौंसिल हाल एवं अन्य महत्त्वपूर्ण स्थानों पर चिपकाकर क्रांतिकारी कार्य कर दिया। यद्यपि बाद में 18 अप्रैल 1767 को श्री बोल्टस को तत्कालीन अंग्रेजी सरकार ने सरकार विरोधी कार्यो में लिप्त बताकर भारत से निष्काषित कर दिया। किंतु भारत में पत्रकारिता का विकास तीव्र गति से होने लगा और जेम्स ने कलकत्ता जनरल एडवरटाइजर या बंगाल गजट नामक एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। इसके बाद सन् 1818 में ईसाई मिसनरियों ने ईसाई धर्म के प्रचार प्रसार हेतु दिग्दर्शन एवं समाचार दर्पण नामक मासिक पत्र का प्रकाशन किया।

भारत में अंग्रेजी सत्ता के साथ ही ईसाई धर्म का प्रचार प्रसार बढने लगा अत: ऐसे में राजा राममोहन राय ने ब्राह्मैनिकल मैगजीन नामक पत्र का प्रकाशन किया जो ईसाई धर्म के प्रभाव को कम करने एवं भारतीय मूल्यों के प्रचार प्रसार करने के उद्देश्य से निकाला गया था।

संक्षेप में, इस प्रकार पत्रकारिता का उद्भव विश्व स्तर पर एवं भारत में प्रारम्भ हुआ।

आज पत्रकारिता अपने चर्मोत्कर्ष पर पहुँच चुकी है। ऐसे में पत्र, पत्रकार, पत्रकारिता को समाचार पत्र एवं समाचार माध्यमों के परिप्रेक्ष्य में समझना अनिवार्य व प्रासंगिक प्रतीत होता है। अत: मूल विषय के विवेचन से पूर्व संक्षेप में इन समस्त बिन्दुओं पर विचार किया जाना अपेक्षित है।

पत्र :- आज यह शब्द दो रूपों में व्यवहृत है। निजी सन्दर्भ में इसका अर्थ चिट्ठी से लगाया जाता है तो सार्वजनिक या पत्रकारिता के सन्दर्भ में इसका व्यापक अर्थ है जो मानव न उससे संबंधित समस्त पहलुओं की सूचना आदि को जन जन तक पहुँचाने का काम करता है। पत्र का राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इतना महत्त्व है कि उसे शब्दों द्वारा व्याख्यायित किया जाना संभव नहीं है। अकबर इलाहाबादी ने इस विषय में कहा है-

खींचो न कमान न तलवार निकालो

जब तोप मुकाबिल हो तो अखबार निकालो।

ऐसे ही महत्त्वपूर्ण विचार नेपोलियन बोनापार्ट ने भी व्यक्त किये हैं-

चार विरोधी पत्र हजार संगीनों से अधिक खतरनाक होते हैं।

निस्सन्देह आज प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रोनिक मीडिया से चपडासी से राष्ट्रपति तक, पुलिस से डॉन तक, सब भयाक्रान्त हैं। स्थिति तो यह है कि जो यह दावा करते हैं कि हमें किसी का खौफ नहीं हैं वास्तव में वे इन दोनों मीडिया के समक्ष निस्सहाय महसूस करते हैं।

पत्रकार - समाचारों के संग्रहण से लेकर उनके व्यवस्थित रूप से प्रकाशन तक की प्रक्रिया में संलग्न कुछ ऐसे विशिष्ट व पत्रकारिता से भिन्न व्यक्ति पत्रकार कहलाते हैं जो संवाददाता से सम्पादक तक की श्रेणी में विभक्त हैं। पत्रकार एक बद्धिजीवी प्राणि है जो विभिन्न सामाजिक विषयों का विशेषज्ञ भी होता है अथवा सामान्य रूप से समाचार एकत्र करके ऐसे अधिकारिक पत्रकार के पास समाचार प्रेषित करता है। यह अत्यन्त दायित्वपूर्ण कार्य है।

पत्रकारिता - निस्सन्देह पत्रकारिता एक पुण्य का काम है जिसमें समर्पण भाव के साथ संवेदनशीलता व दूरदर्शिता का समावेश होना अनिवार्य घटक माना गया है। पत्रकार मानव, प्रकृति, ईश्वर एवं मानवजनित समस्त विषयें की पल प्रतिपल की जानकारी को आम लोगों तक पहुँचाने का काम करता है। यही कर्म पत्रकारिता की संज्ञा से संज्ञित होता है। आज पत्रकारिता अपने स्वतन्त्र विभागों में कार्य करने लगी है, जैसे आर्थिक पत्रकारिता, खेल पत्रकारिता, कृषि पत्रकारिता, विधि पत्रकारिता, फिल्म पत्रकारिता, शैक्षिक पत्रकारिता, मौसम पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता साहित्यिक पत्रकारिता, कैरियर पत्रकारिता, खोजी पत्रकारिता, पीत पत्रकारिता आदि।

निष्कर्षत: पत्रकारिता समाचार पत्र-पत्रिकाऐं, टेलीविजन, रेडियो, विज्ञापन एवं फिल्म आदि के माध्यम से की जाती है।

साहित्य और पत्रकारिता- इन दोनों का अन्त: सम्बन्ध अक्षुण्य है। वास्तव में साहित्य और पत्रकारिता एक दूसरे के पूरक हैं। पत्रकारिता यदि साहित्य की निर्माण भूमि है तो साहित्य भी पत्रकारिता का अलंकार है।[14]

स्वतन्त्रता प्राप्ति हेतु जहाँ एक ओर अंग्रेजों से गोली और बन्दूक की भाषा में स्वतन्त्रता सेनानी वीर सिपाही बातें कर रहे थे वहीं तत्कालीन बुद्धिजीवी समाज ने कलम और शब्दों के माध्यम से अपनी जंग का उद्घोष कर दिया था किंतु साहित्यकार कहलाने वाला ये समाज दोहरी भूमिका का निर्वाह कर रहा था। एक तरफ तो अंग्रेजी सत्ता की बखिया उधेड़ रहा था तो दूसरी तरफ मासूम और अशिक्षित भारतीयों को जागृत करने, रूढियो, कुरीतियों को ध्वस्त करके संवेदनशील होने का आह्वान भी कर रहा था।

यों तो 20 जनवरी सन् 1780 को बंगाल गजट नामक साप्ताहिक पत्र प्रकाशित होने लगा जिसमें यद्यपि कुल चार ही पृष्ठ थे लेकिन यह पूर्ण निर्भयता से तत्कालीन अंग्रेजी भ्रष्ट सरकार के कारनामों को उजागर करने लगा था। इसे प्रकाशिता करने वाले जैमस आस्ट हिक्की थे, जो विदेशी होने के उपरान्त भी भारत की मिट्टी से प्यार और भारतीयों से स्नेह करते थे।

बंगाल, मद्रास, गुजरात, महाराष्ट्र एवं राजस्थान से विभिन्न पत्र पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा लेकिन साहित्यिक पत्रकारिता के जनक मुख्य रूप से भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को ही माना जाता है। सामान्यत: भारतेन्दुयुगीन, द्विवेदी युगीन, छायावाद युगीन एवं छायावादोत्तर युगीन कालों में साहित्यिक पत्रकारिता को विवेचित किया गया है। हिन्दी पत्रकारिता में भारतेन्दु युग को दूसरे दौर के रूप में देखा जाता है।

बाबू भारतेन्दु हरिश्चन्द्र देश की दुर्दशा को देखकर व्यथित हो उठे-

''अब जहँ देखहु तहँ दुखहि दुख दिखाई

हा हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई।''

भारतेन्दुजी ने पत्रकारिता के माध्यम से स्वदेशी आंदोलन एवं भारत की स्वतन्त्रता का सूत्रपात किया। अंग्रेजी सरकार की भाषा, कार्यशैली एवं नीतियों का घोर विरोध किया। 15 अगस्त सन् 1867 को काशी से 'कवि वचन सुधा' मासिक के प्रकाशन के साथ ही नये साहित्यिक क्रांतिकारी युग का प्रारम्भ हो गया। यह पत्र मासिक था लेकिन शीघ्र ही पाक्षिक बन गया। गद्य एवं पद्य में प्रकाशित होने वाला यह पत्र सन् 1875 में साप्ताहिक हो गया। पत्र का मासिक से साप्ताहिक होना हरिश्चन्द्र की अंग्रेजी के प्रति छटपटाहट और आक्रोश को व्यक्त करता है। पत्र ने जन जागरण की विशिष्ट भूमिका अदा की। सरकार ने इस पत्र को सरकार विरोधी घोषित करते हुए सन् 1885 में बन्द कर दिया। इस 22 पृष्ठीय पत्र की 250 प्रतियाँ मुद्रित होती थीं।[15] भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हरिश्चन्द्र मैग्जीन का संपादन प्रकाशन किया जो बाद में हरिश्चन्द्र चन्द्रिका के नाम से प्रकाशित होने लगा। इसके अतिरिक्त बालबोधिनी नामक पत्रिका का भी संपादन एवं प्रकाशन किया।[17]

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की एक विशिष्ट मित्रमंडली थी जिसमें लेखक, कवि एवं पत्रकारों का जमावड़ा था। बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिका दत्त व्यास, प्रेमघन, राधाचरण गोस्वामी आदि। वैसे हरिश्चन्द्र ने लगभग दो दर्जन से भी अधिक पत्र पत्रिकाओं के सम्पादन एवं प्रकाशन में अपना सहयोग दिया था।[17]

राष्ट्रीय आन्दोलन को त्वरित गति प्रदान करने में बालकृष्ण भट्ट की पत्रिका हिन्दीप्रदीप ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। यह पत्रिका 7 सितम्बर सन् 1878 में प्रयाग इलाहाबाद से प्रकाशित होने लगी थी।

राष्ट्रीय चेतना एवं राजनीति से सम्बद्ध होने के कारण यह पत्रिका अंग्रेजी सरकार की कोपभाजक बन गई और सन् 1910 में इस पत्रिका में पण्डित माधव शुक्ल की कविता जरा सोचो तो यारो यह बम क्या है? प्रकाशित हुई। इस कविता का प्रकाशन ही इस पत्रिका के अवसान का मुख्य कारण बना।

वास्तव में यह पत्रिका क्रांति और साहित्य का सेतु थी। इस पत्रिका ने अंग्रेजी सरकार की प्रेस नीति, भाषा एवं अन्य शासन व्यवस्थाओं पर बेधड़क प्रहार किये वहीं हिन्दी साहित्य के उन्नयन में अपना सहयोग देते हुए साहित्यिक आलोचनाओं को प्रकाशित करके नवीन दिशा बोध दिया।

हिन्दी प्रदीप ही एक ऐसा पत्र था जो अपेक्षाकृत गंभीर आलोचनाएँ प्रकाशित करता था।[18]

सन् 1880 में कलकत्ता से उचित वक्ता नामक पत्र निकला जिसके सम्पादक पं. दुर्गाप्रसाद मिश्र थे। इस पत्र का आदर्श वाक्य था हित मनोहारी च दुर्लभ: वच:। इस पत्र का मुख्य कार्य था अंग्रेजों एवं राजे रजवाड़ों के मध्य उत्पन्न हुए विवाद पर बेबाक टिप्पणी करना। व्यंग्यात्मक लेखों द्वारा पत्र ने एक अभियान चला रखा था। इस पत्र में तत्कालीन प्रसिद्ध रचनाकारों की विविध रचनाओं का प्रकाशन होता था। कलकत्ता से एक अति महत्त्वपूर्ण पाक्षिक पत्र भारत मित्र 17 मई सन् 1878 को प्रकाशित हुआ जो बाद में दैनिक पत्र बन गया इस पत्र ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में राष्ट्र की खूब सेवा की थी। पत्र के सम्पादक बालमुकुन्द गुप्त थे जिन्होंने बड़ी विद्वता से शिव शम्भु के चिट्ठे शीर्षक से टिप्पणियां लिखकर लार्ड कर्जन के अत्याचारों का विरोध किया एवं जन जन तक अंग्रेजी प्रशासन व अंग्रेजी अधिकारियो के कारनामों को पहुँचाया। लगभग पचास वर्ष तक प्रकाशित होने वाले इस पत्र ने जनजागृति उत्पन्न करने में पूर्ण सहयोग दिया। जुलाई सन् 1881 में मिर्जापुर से आनन्द कादम्बिनी नामक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। श्री बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन इसके सम्पादक थे। पत्रिका में 44 पृष्ठ हुआ करते थे तथा यह पत्रिका साहित्यिक कलेवर के अलावा राष्ट्रीय समस्याओं के कारण एवं निवारण पर बड़े स्पष्ट रूप में विचार करती थी। इसमें प्रकाशित होने वाली सामग्री स्तरीय और राष्ट्रीय भावना से परिपूर्ण हुआ करती थी। पुस्तक समीक्षा का स्तम्भ सर्वप्रथम इसी पत्रिका ने प्रारम्भ किया था। श्री बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन के सम्पादन में ही मिर्जापुर से सन् 1893 में एक विशिष्ट साहित्यक पत्रिका नागरी नीरद का साप्ताहिक प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। इस पत्रिका ने भी राष्ट्रीय चेतना जोगरण में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

15 मार्च सन् 1883 में प्रतापनारायण मिश्र ने कानपुर से राष्ट्रीय पत्रों की परम्पराओं को जन्म देते हुए ब्राह्मण नामक पत्र का प्रकाशन प्रारम्भ किया।

इसी भाँति हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार बाबू देवकी नन्दन खत्री एवं जगन्नाथदास रत्नाकर ने मिलकर सन् 1894 में साहित्य सुधानिधि नामक पत्र का प्रकाशन किया। सन् 1895 में अपने समय की तेजस्वी और धारधार पत्रिका नागरी प्रचारिणी पत्रिका का प्रकाशन होने लगा। यद्यपि यह साहित्यिक पत्रिका थी लेकिन इसमें प्रकाशित होने वाली सामग्री ने भारतीयों को जागृत करने का विशेष सहयोग दिया है। पत्रिका काफी परिवर्तनों के दौर से गुजरी लेकिन प्रकाशित होती रही। पत्रिका के सम्पादक मंडल में श्याम सुन्दरदास, राधाकृष्णदास, कालीदास,रामचन्द्र शुक्ल, रामचन्द्र वर्मा, पं. गौरीशंकर औझा, चन्द्रधर शर्मा गुलेरी, मुंशीदेवी प्रसाद आदि विद्वान सम्मिलित थे।

सन् 1903 में पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी सरस्वती पत्रिका के सम्पादक बने और इस पत्रिका के प्रकाशन में अपना विशिष्ट सहयोग प्रदान किया। द्विवेदी युग नाम से प्रसिद्ध इस कालखण्ड में हिन्दी भाषा अपने नवीन व परिष्कृत रूप में आई। वहीं इस पत्रिका ने लोगों में बौद्धिक स्तर पर एक उद्वेलन उत्पन्न किया। अनेकों नये कवी, लेखक व पत्रकार इस पत्रिका से जुड़े और उन्होंने ज्वलन्त विषयों पर अपनी विविध नवीन रचनाओं का सृजन कर समाज को जागृत करने का प्रयास किया। इस पत्रिका से जुड़ने वाले रचनाकारों में मैथिलीशरण गुप्त, गया प्रसाद शुक्ल स्नेही, लोचन प्रसाद पाण्डेय, गोपालशरण सिंह आदि प्रमुख थे।

द्विवेदी जी की एक विशेषता यह थी कि वे रचनाकारों को नवीन विषय देकर उन पर लिखने का आग्रह करते तथा तत्पश्चात् भाषा एवं अन्य त्रुटियों का शोधन कर रचना को पत्रिका में प्रकाशित करते। द्विवेदी जी का साहित्यिक अनुशासन इतना सख्त था कि बड़े बड़े रचनाकार भी थर्राते थे।[19] सरस्वती पत्रिका ने साहित्यिक पत्रकारिता के क्षेत्र में युगान्तकारी परिवर्तन किया। कालान्तर में श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस पत्रिका का सम्पादन भार ग्रहण करके नये युग की साहित्यिक, राजनैतिक और सामाजिक चेतना को रेखांकित किया। अनेक नये स्तम्भों का प्रारम्भ करके द्विवेदी जी ने इस पत्रिका के कलेवर में व्यापक जन समूह की भावनाओं को प्रतिबिम्बित किया।[20]

इसी कालखण्ड की एक और विप्लवकारी साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन जयपुर से सन् 1900 में हुआ। समालोचना नामक इस पत्रिका के वास्तविक सम्पादक पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी थे। यह पत्रिका सरस्वती पत्रिका की भाँति बहुत लोकप्रिय हुई। इस पत्रिका में तत्कालीन श्रेष्ठ रचनाकार पं. रामचन्द्र शुक्ल, मिश्रबंधु, पं. बालकृष्ण भट्ट, अयोध्याप्रसाद खत्री, डॉ. श्यामसुन्दर दास एवं पं. गौरीशंकर हीरा शंकर औझा आदि की रचनाएँ प्रकाशित होती थीं जिन्होंने तत्कालीन भारतीय समाज को एक नवीन दिशा बोध करवाया।

प्रसिद्ध कवि व लेखक जयशंकर प्रसाद के भांजे अम्बिका प्रसाद गुप्त ने सन् 1909 में इन्दू नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन एवं सम्पादन किया। एक और विशिष्ट साहित्यिक पत्रिका मर्यादा का प्रकाशन सन् 1910 में प्रयाग से हुआ। इसके प्रथम सम्पादक कृष्णकान्त मालवीय थे। इसके पश्चात् इसके सम्पादकों में ज्ञानमंडल काशी, श्री शिवप्रसाद गुप्त, सम्पूर्णानन्द एवं मुंशी प्रेमचन्द जैसे महान् रचनाकारों का नाम सम्मिलित है। इसके प्रवासी विशेषांक के रूप में प्रकाशित हुए अन्तिम अंक के सम्पादक श्री बनारसीदास चतुर्वेदी थे।[21] साहित्य के अलावा इस पत्रिका ने जन जन को विविध सामाजिक एवं मानवीय विषयों से अवगत करवाने का सफल उद्योग किया था। विशेषत: तत्कालीन राजनीतिक संबंधी विषयों का प्रकाशन पत्रिका में अपने नाम के अनुरूप पूरी निष्ठा से हुआ करता था।[22]

पण्डित माखनलाल चतुर्वेदी, गणेशशंकर विद्यार्थी एवं श्री बालकृष्ण शर्मा नवीन जैसे सम्पादकों के दिशा निर्देश में खण्डवा से सन् 1913 में एक मासिक पत्रिका प्रभा का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। सन् 1917 के पश्चात यह पत्रिका विशुद्ध रूप से राजनीतिक पत्रिका बन

गई।[23] सन् 1907 में कलकत्ता से श्री अम्बिका प्रसाद वाजपेयी ने नृसिंह साप्ताहिक का प्रकाशन किया वहीं इसी वर्ष श्री शांति नारायण भटनागर के सम्पादन में इलाहाबाद में स्वराज्य साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ। यह बड़ा ही क्रांतिकारी पत्र था जिसके सम्पादकों में नन्दगोपाल चौपड़ा, मुंशीराम सेवक, रामहरि, शामदास वर्मा, लड्डाराम कपूर एवं रामदास मोतीलाल वर्मा आदि थे। राष्ट्रीय विचारधारा के कारण इस पत्र को अंग्रेजी सरकार ने सन् 1909 में बंद कर दिया। इसी भाँति स्वाधीनता आन्दोलन के प्रमुख पत्र के रूप में पंडित सुन्दर लाल ने कर्मयोगी पत्र निकाला जिसे सन् 1910 में ही बंद कर दिया गया।

सन् 1913 से सन् 1930 तक का समय हिन्दी पत्रकारिता में अपना विशिष्ट स्थान मात्र प्रताप पत्र के कारण रखता है। इस पत्र को कानपुर से श्री गणेशशंकर विद्यार्थी ने निकाला जिसके आधार स्तम्भ थे– माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा नवीन, पं. दशरथ प्रसाद द्विवेदी कृष्णदत्त पालीवाल। इस पत्र में तत्कालीन रचनाकारों की रचनाएं प्रकाशित हुआ करती थीं साथ ही भगतसिंह जैसे क्रांतिकारी भी छद्मनाम से इसमें लिखा करते थे।

पांडेय बेचन शर्मा उग्र के सम्पादन में सन् 1919 में एक और महत्त्वपूर्ण क्रांतिकारी साहित्यिक पत्र निकाला स्वदेश। विशेषत: उत्तर प्रदेश के ग्रामीण एवं अन्य अंचलों में स्वाधीनता की लहर को फैलाने का कार्य इस पत्र ने किया। सन् 1924 में इस पत्र में एक कविता छपी जिसके कारण पांडेय बेचन शर्मा उग्र को अंग्रेजी सरकार ने नौ माह का कारावास दिया।

सन् 1913 में अति विशिष्ट साहित्यिक पत्रिका हिन्दी साहित्य सम्मेलन का प्रकाशन त्रैमासिक रूप में हुआ। इसके सम्पादक डॉ. धीरेन्द्र वर्मा थे। बाद में यह पत्रिका मासिक हो गई। इस पत्रिका ने मुख्य रूप से हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के साथ लोगों को अपने लेखों, कविता कहानियों एवं टिप्पणियों के माध्यम से जागरूक करने का कार्य किया। इसके सम्पादकों में वियोगी हरि, भगवती प्रसाद दीक्षित, इलाचन्द्र जोशी, भगवतीचरण वर्मा, रामकुमार वर्मा, माता प्रसाद गुप्त, रामचन्द्र टंडन, गिरिजाकुमार घोष, गुरु प्रसाद, उदयनारायण तिवारी, हरिप्रसाद द्विवेदी, रामप्रताप त्रिपाठी, ज्योतिप्रसाद मिश्र, दयाशंकर दुबे आदि दिग्गज साहित्यकार थे।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि द्विवेदी युग को साहित्यिक पत्रकारिता ने अपनी दोहरी भूमिका का निवर्हन करते हुए सच्चे भारतीय के कर्त्तव्यों को पूर्ण किया है।

सन् 1920 में श्री रूपनारायण पाण्डेय एवं दुलारे लाल भार्गव के सम्पादन में लखनऊ से माधुरी नामक साहित्यिक पत्रिका का प्रकाशन हुआ। आगे चलकर इसके सम्पादन का भार मुंशी प्रेमचन्द, जगन्नाथ दास रत्नाकर, ब्रजरत्नदास, कृष्ण बिहारी मिश्र, शिवपूजन सहाय एवं सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे साहित्यकारों ने वहन किया।

मुशी प्रेचन्द ने सन् 1939 में हंस पत्र का प्रकाशन बनारस से प्रारम्भ किया। शीघ्र ही यह पत्र कथा साहित्य का प्रतिनिधि पत्र बन गया और अपनी रचनाओं के माध्यम से इसने समाज में एक विशेष जागरण का सूत्रपात किया। इसी भाँति हिन्दी साहित्य के अन्य सशक्त हस्ताक्षर सूर्यकांत त्रिपाठी निराला ने सन् 1922 में लखनऊ से समन्वय नामक पत्र का सम्पादन किया। इसने तत्कालीन राष्ट्रीय आन्दोलन के समर्थन अंग्रेजी के स्थान पर भारतीय भाषाओं की प्रतिष्ठा तथा हिन्दी साहित्य की चतुर्दिक उन्नति में महत्तवपूर्ण कार्य किया।[24] मुंशी प्रेमचन्द एवं शिवपूजन सहाय जैसे साहित्यकारों ने काशी से सन् 1932 में प्रकाशित होने वाले जागरण नामक का सम्पादन भी किया था। इस पत्र में पंत, निराला एवं जयशंकर प्रसाद जैसे रचनाकारों की रचनाएँ प्रकाशित हुआ करती थीं। बाद में मुंशी प्रेमचन्द ने इसे अपने अधिकार में ले लिया और यह राजनीतिक साप्ताहिक रूप में प्रकाशित होने लगा।

इसी काल की मुख्य पत्र पत्रिकाओं में, सन् 1936 में प्रकाशित हुई रूपाय पत्रिका जिसके सम्पादक सुमित्रानन्दन पंत एवं शांति निकेतन से प्रकाशित होने वाली पत्रिका विश्व भारती जिसके सम्पादक पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी थे, प्रमुख हैं। सन् 1936 में ही बिहार हिन्दी साहित्य सम्मेलन पटना से त्रैमासिक साहित्य पत्र का प्रकाशन एक महत्त्वपूर्ण घटना है।

श्री बनारसीदास चतुर्वेदी के सम्पादकत्व में सन् 1928 में कलकत्ता से विशाल भारत नामक पत्र का प्रकाशन हुआ जिसका आगे चलकर सम्पादन सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय, श्री रामशर्मा, मोहन सिंह सेंगर जैसे रचनाकारों ने किया। उक्त पत्र ने विशेषत: अश्लील साहित्य एवं पाश्चात्य साहित्य व संस्कृति के विरुद्ध एक लम्बा अभियान चलाया और स्वाधीनता आन्दोलन में अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वहन भी किया।

इस समय की कुछ विशिष्ट पत्रिकाओं में गंगा जिसके सम्पादक श्री शिवपूजन सहाय एवं पं. गौरी नाथ झा थे, वाणी जो सन् 1927 में इन्दौर से पं. कालिका प्रसाद दीक्षित कुसुमाकर के सम्पादकत्व में प्रकाशित हुई तथा हर गोविन्द सेठ, पांडेय बेचन शर्मा उग्र, शिवपूजन सहाय, नवजादिक लाल एवं सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जैसे लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकारों के सम्पादकत्व में सन् 1923 में मतवाला नामक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन पत्रकारिता के इतिहास के विशिष्ट स्थान रखता है। इस ऐतिहासिक पत्र ने हास्य व्यंग्य विधा के माध्यम से पूर्ण निर्भीक होकर देश, समाज की साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक सेवा में अपना भरपूर योगदान दिया। सन् 1924 में महारथी मासिक का प्रकाशन रामचन्द्र शर्मा ने दिल्ली से, सन् 1939 में पण्डित माखन लाल चतुर्वेदी ने कर्मवीर का सम्पादन जबलपुर से, श्री कृष्ण दत्त पालीवाल ने सैनिक का प्रकाशन आगरा से तथा श्री यशपाल ने प्रसिद्ध क्रांतिकारी पत्र विप्लव का प्रकाशन व सम्पादन किया।

साहित्यिक पत्रकारिता के क्रांतिकारी राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन की ऐतिहासिक यात्रा से ज्ञात होता है कि महान् क्रांतिकारी योद्धाओं, सैनिकों के समतुल्य ही साहित्यिक पत्र पत्रिकाओं में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। तत्कालीन अंग्रेजी सरकार के विरुद्ध लिखने का परिणाम सहर्ष स्वीकार करते हुए तत्कालीन साहित्यकारों ने अपनी कलम को अनवरत जारी रखा। अनेकों बार ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई जब साहित्यकारों को जेल की यातनाओं को भुगतना पड़ा अथवा पत्र पत्रिका को राष्ट्र विरोधी घोषित कर देने के कारण बंद कर देना पड़ा। लेकिन साहित्यकारों ने छद्मनाम से भूमिगत होकर या फिर पुन: एक नवीन नाम से अपना अभियान प्रारम्भ रखा। इसीलिए आज वे समस्त हिंदी के साहित्यकार जिन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से अंग्रेजी सरकार की नीवं को हिलाकर रख दिया। सेल्यूट के हकदार हैं।

सन्दर्भ सूची :-

1. शारदा देवी – कलुचरि अभिलेखों का अध्ययन, पृष्ठ 10
2. मनोज कुमार पटैरिया – हिन्दी विज्ञान पत्रकारिता, पृष्ठ 26
3. उषादेवी बंसल – गंग एवं कदम्बवंशीय अभिलेख : एक अध्ययन पृष्ठ 09
4. किरण बख्शी – मध्यप्रदेश से प्राप्त छठी शताब्दी तक के अभिलेखों का अध्ययन पृष्ठ 31
5. सिद्धेश्वर शास्त्री – चित्राव – भारतीय चरित्र कोश पृष्ठ 820
6. राम अवतार शर्मा – हिन्दी साहित्य के विकास में हिन्दी पत्रकारिता का योगदान, पृष्ठ 15
7. डॉ. संजीव भानावत – सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता पृष्ठ 42
8. सिद्धेश्वर शास्त्री – चित्राव– भारतीय चरित्रकोश पृष्ठ 820
9. सत्यकेतु विद्यालंकार – मौर्य समाज का इतिहास पृष्ठ 488
10. डॉ. मृदुला वर्मा – हिंदी की सर्वोदय पत्रकारिता पृष्ठ 32
11. डॉ. संजीव भानावत – सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता पृष्ठ 45
12. डॉ. संजीव भानावत – सांस्कृतिक चेतना और जैन पत्रकारिता, पृष्ठ 44–45
13. प्रीता व्यास – पत्रकारिता – परिचय और विश्लेषण, पृष्ठ 27
14. डॉ. संजीव भानावत – पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, पुष्ठ 32
15. डॉ. प्रतापनारायण टंडन – वृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश, पृष्ठ 575
16. डॉ. विश्वास पाटिल – हिंदी पत्रकारिता और कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर, पृष्ठ 167
17. डॉ. रमेश कुमार जैन – हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास पृष्ठ 123
18. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 486
19. डॉ. प्रताप नारायण टंडन – वृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश, पृष्ठ 585
20. डॉ. संजीव भानावत – पत्रकारिता के विविध परिदृश्य, पृष्ठ 103–104
21. डॉ. प्रताप नारायण टंडन – वृहत हिन्दी पत्रकारिता कोश, पृ. 580–81
22. हर प्रसाद गौड – सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण पृष्ठ 146
23. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास पृष्ठ 534
24. डॉ. नगेन्द्र – हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 613